**National Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.nationaljournals.com**
**Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 206-208**

# हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत उपन्यास 'चारू चन्द्र लेख' में पात्रों सत-असत रुप

**रेणु बाला, डॉ॰ विजय लक्ष्मी महेंद्रा**

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बिकानेर राजस्थान, भारत।

**प्रस्तावना**

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने 'चारू चन्द्र लेख' उपन्यास में सत-असत पात्रों के मनोभावों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। चन्द्रलेखा का रूप-वर्णन पर्याप्त विस्तार से किया है। बत्तीस लक्षणों से युक्त चन्द्रलेखा को रूप वंशानुक्रम से ही मिला है। वह परिमर्दिदेव और जसित्रचन्द्र का सम्मिलित विग्रह है। गंगा तट पर तरूण-तापस चन्द्रलेखा के रूप विस्मित-अभिभूत होकर कहता है- "यह उन्नत ललाट, यह कुन्चित केश-राशि, यह दक्षिणावर्त रामराजि यह तिल-पुष्पवत् नासिका और सधन भृकुटियों के नीचे सधन अराल-रेख।" [१] अवन्तिका नरेश प्रथम भेंट में चन्द्रलेखा को वन में देखते है तो उसे अरूण-पल्लव लता समझते है निकट पहुंचकर पाते है कि वह अपूर्व सुन्दरी देवबाला है। उसके घन-चिक्कन कुंचित केशों के मध्य सीमान्त रेखा ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो किसी ने अंधेरी रात में राजमार्ग पर दीया जला दिया हो। मानो कसौटी पर कंचन की रेखा हो भोहें दो प्रति भेंटों के काले धनुषतुल्य लग रही थी, और नेत्रकोरको से अद्भूत द्रावत प्रभाक्षरित हो रही थी।" [२] राजा मानो मृगनेत्रों को प्रत्यक्ष देख रहे थे। त्रिज्यान्मनोज्ञा काम कला सी चन्द्रलेखा के मृणाल-नाल से कोमल बाहु और पद्मकोमल चरण थे। विद्याधर भट्ट और धीर शर्मा राजमहल में चन्द्रलेखा के रूप पर विस्मित है। वे एक टक देखते हुए कहते है- "बेटा अस्सी वर्ष के जीवन में प्रथम बार बत्तीस लक्षणों से समन्वित सौभाग्यवती नारी का दर्शन पा रहा हूँ।" [३] राजा चन्द्रलेखा के रूप को महल में जी भर निहारते है तो पाते हैं- उनके नेत्रों की स्निग्धता, नीलता, विशालता अद्भूत थी।

चन्द्रलेखा के नासिका अग्र भाग में किंचित धनुषायित धीर शर्मा ने उसे पद्मिनी नारी कहा था। नागनाथ भी परम सौन्दर्य चन्द्रलेखा को महिमामयी पराशक्ति कहते है। रानी के रूप और गुणों में सम्मोहन शक्ति विद्यमान है। सातवाहन रानी को पाकर अपने को पूर्णकाम मानता है। वह कहता है- "देवी मेरे लिए तुम्हारा रूप लावण्य ही सर्वस्व है। उसको पाकर अपने को चरितार्थ अनुभव कर रहा हूँ। इसके भीतर जो चिन्मय तेजोमय तत्व है। उसे पा जाऊं तो शक्तिशाली हो जाऊँगा।" [४] रानी सिद्ध योगिनी बनने के चक्रवात में अपना सहज रूप खो बैठती मृगदृगी चन्द्रलेखा के नेत्र शंख वराटिका के समान उज्जवल होकर भी राग शून्य हो जाते है। परन्तु दुर्बलता भी उनकी क्रांति को क्षीण नहीं कर सकी थी। युद्ध में घायल हो जाने पर भी रानी निष्प्रभ नहीं है। "सुभ्र कोशेय वस्त्र से आगुल्फ आवेष्टित उनकी तन्वी अंगयष्टि क्षीर-सागर में खिली दमन व्यष्टि की शोभा को लजा रही थी।" [५] राजा पर हुए घुण्डकों के आक्रमण के समय उनकी रक्षा के लिए सन्नद्ध रानी महिषमर्दिनी का प्रतिरूप प्रतीत होती है।

कान्यकुब्जेश्वर महाराज जयित्रचन्द्र गाहडवार एक बार विद्याधर भट्ट तथा नौ अनुचरों के साथ दिल्ली अजमेर की ओर तुर्को की प्रकृति और उनके रण कौशल का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करने के लिए जा रहे थे। मार्ग में उन्हें समाचार मिला की पृथ्वी राज की सेना महोबा पर आक्रमण करने के लिए चढ़ पड़ी है। अतः राजा की टोली राज्य ओर लौट पड़ी।

उधर संयोगवश परिमर्दिदेव की और से कन्या चन्द्रप्रभा कुछ अनुचरों और सेविकाओं के साथ अपने अमंगल-नाश के लिये काशी-यात्रा पर जारी थी। मार्ग में चन्दप्रभा पर सहसा पर संकट आ पड़ा। सुरक्षित समझे जाने वाले कान्यकुब्ज-क्षेत्र में विदेशियों ने प्रवेश करके चन्द्रप्रभा की शिविकाओं पर आक्रमण कर दिया। महाराज जयित्रचन्द्र की एकादश सदस्यी टोली ने प्राणों की बाजी लगाकर चन्द्रप्रभा की रक्षा की। "राजबाला चन्द्रप्रभा को महाराज जयित्रचन्द्र के अश्व पर उनके साथ बैठकर भागने को विवश होना पड़ा।" [६] इस प्रकार जयित्रचन्द्र और परिमर्दिदेव का संयुक्त संयोग वश चन्द्रप्रभा की कुटी में पलने लगा, कुन्ती की कोख से कर्ण की भांति। एक कृषक बाला अपने बांध्यव्य के कलंक को धोने के उद्देश्य से काशी गयी थी। उसे काशी के प्रसिद्ध ज्योतिषी विद्याधर भट्ट मिले, जिन्होंने भविष्यवाणी की "माता तुझे संतान-सुख तो है, संतान नहीं है।" [७] ज्योतिषी के निर्देशानुसार कृषक दम्पति ने विश्वनाथ मन्दिर में प्रार्थना-प्रतीक्षा की। महाशिवरात्रि के ब्रह्म मुहूर्त में एक साधु ने उन्हें जगाया "कैसे सो रहे हो नन्हा बच्चा इतना रो रहा है।" [८] कृषक बाला ने क्षोमवस्त्रा सुन्दर नन्हीं बालिका को उठाया। साथ में पाँच स्वर्ण मुद्राएं और कम्पित कर से लिखा छोटा पत्र था। अभ्यस्त कम्पित करने केवल इतना लिखा था- "शौभाग्यवती माता को अपराधिनी माता की भेंट।" [९] यह अपराधिनी माता थी चन्द्रप्रभा और उनकी बालिका चन्द्रलेखा। चन्द्रप्रभा के समान ही रूपाभा में उसकी कन्या चन्द्रलेखा अप्रतिम थी। चन्द्रलेखा जयित्रचन्द्र और परिमर्दिदेव का संयुक्त विग्रह थी, दो श्रेष्ठ राजवंशों के संयुक्त प्रताप की प्रतिमा थी चन्द्र लेखा कुलाभिमान का शरीरधारी तत्व था।

उच्च कुल में उत्पन्न चन्द्रलेखा का भरण-पोषण हुआ सामान्य कृषक परिवार में और उसकी जात-पात अज्ञात होने के कारण उसके लिए वर नहीं मिल पा रहा था। उसकी उम्र उन्नीस वर्ष हो गयी थी। उसकी कोई भी सम-वयस्का अब ग्राम में अविवाहित नहीं बची थी। परन्तु उसके माता-पिता को उसके विवाह की चिन्ता नहीं हैं। उन्हें काशी के ज्योतिषी की भविष्यवाणी-"कोई प्रतापी राजा स्वयं बरेगा" [१०] पर विश्वास है।

किशोरी चन्द्रलेखा नित्य गंगा स्नान को जाया करती थी। वही नित्य एक कृच्छाधारी तरूण तापस को देखा करती थी। एक दिन साहस करके चन्द्रलेखा ने तपस्वी से बात की ओर उससे कृच्छाचार त्यागने का आग्रह किया। तपस्वी अभिभूत हो गया। उसने चन्द्रलेखा के सुप्त देवत्व को जगाा दिया, यह कहकर कि कौन कहता है कि तुम सामान्य ऋषिबल-किशोरिका हो तुममें

रानी के सब लक्षण हैं। तुम रानी से भी बड़ी सिद्ध-योगिनी बनने के लिए पैदा हुई हो।" [११] उसने तरूण तापस के लिए भोजन बनाया। तापस श्रृद्धा भाव से भोजन करने के लिए उपस्थित भी हुआ परन्तु घर-गांव वालों ने तपस्वी को भगा दिया। चन्द्रलेखा तपस्वी के अपमान से आहत हुई और भोजन छोड़ बैठी। आधीरात को वह भोजन का थाल औश्र जल का भृगांर लेकर तापस की खोज में जंगलों की ओर निकल पड़ी। वहीं उसकी भेंट उज्जयिनी के राजा से, आकस्मिक रूप से हो गयी। उसका पूर्व में देखा स्वप्न आज सत्य सिद्ध हो गया। उसका स्वप्न था- "वह एक छोटी सी सोने की चिड़िया हैं, जो सोने के पिंजरे में बन्द है। न जाने कितने लोग पिंजरा तोड़कर ले जाने को आये परन्तु पिंजरा टूटा नहीं, अन्त में घुड़सवार आया और पिंजरा ही उठाकर चलता बना।" [१२]

चन्द्रलेखा निकली थी तपस्वी को खोजने औश्र जन्म-जन्म के साथी अवन्तिका नरेश को पाकर राजमहिषी बनकर राजभवन पहुंचती है और राजा को सातवाहन नाम देती है। उसने सातवाहन से अनुरोध किया था मुझे अधिक छूट मत देना। पर राजा चन्द्रलेखा से प्रभावित होते गये। बत्तीस लक्षणों से युक्त, पूर्ण नारी बनने के बाद, सिद्ध-योगिनी बनने के लिए रसायन-विद् नागनाथ के साथ कोटिवेधी रस सिद्ध करके जगत को रोग-जरा मृत्यु से मुक्त कराने के लिये राजा की आज्ञा लेकर राजभवन छोड़ देती है। राजा विवश होकर अपनी जन्म-जन्म संगिनी, मदनश्री को साधना हेतु अनुज्ञा देते हैं।

पारद और अभ्रक को सरल करके चन्द्रलेखा पार्श्वनाथ के पादमूल में नागना के साथ कोटिवेधी रस की सिद्धि नजदीक ही थी कि घुण्डवेश्वर के षड्यन्त्र से राजा ने भ्रातृज नागनाथ पर आक्रमण करते हैं। नागनाथ की मृत्यु हो जाती है। रानी नागनाथ की मृत देह लेकर आकश में उड़ जाती हैं, और नागनाथ की मृत देह को वहां के साधु साधनार्थ देकर आगे को उड़ चलती है। एक गुा द्वार पर चन्द्रलेखा को साधु के दर्शन हुए। गुहा से निकली तापस-बाला ने रानी का स्वागत किया और स्त्री-पूजा के विधान को निस्सार बताया। यहीं रानी पश्चाताप हुआ, पति को छोड़कर साधना के फेर में उलझने का। वह सोचती है- "हाय मैंने हीरा पाया था और रेत में फेंक दिया।" [१३] अगला पड़ाव चन्द्रलेखा का ही होता है- नाटीमाता का आश्रम यहां नाटीमाता की पालिता पुत्री,क्रियारूपा, सातवाहन की विश्वस्त सेविका मैना से नारी की भेंट होती है। मैना की सहायता से यहीं राजा चन्द्रलेखा से मिलने जाते हैं। मायाविष्ट रानी को, विश्राम के लिये, माता विष्णुप्रिया के आश्रम पर पहुचाया जाता है। यहां रात्रि के घन अन्धकार में घुण्डकों का आक्रमण होता है। राजा को बचाने के प्रयास में रानी युद्ध करते हुए घायल हो जाती है और सबसे अदृश्य होकर रहती है। जन-जन में बात व्याप्त हो जाती है कि वे दसभुजा-धारिणी, आकाश-धारिणी हो गयी हैं। अमोध ब्रन राजा को बताते हैं कि रानी जीवित है पर अभी मिल नहीं सकती। विद्याधर भट्ट का राजनीतिक पुत्र लेकर पुण्डीर राजा के समीप उपस्थित होता है और प्रिय समाचार देता हे- रानी धर्मावितार से मिलने को आकुल है।

ग्रन्थान्त में शाह के संहार के पश्चाताप से व्यथित मैना आत्मशात करती है घायल मृतप्राय मैना को उठाकर बोधा औश्र श्लथ-क्लान्त चन्द्रलेखा को पीठ पर लाद कर सातवाहन सुरक्षित स्थान पर ले जाते हैं। यही है बत्तीस लक्षणों से युक्त पूर्ण नारी का अपूर्ण जीवन वृत। उपन्यासकार की लेखनी जितनी चन्द्रलेखा की के रूप वर्णन में रमी है उतनी उसके वस्त्रालंकार के वर्णन में नहीं। सुभ्रकोशेय वस्त्र और वन देवी रूप में, राज महिषी के रूप में और महिष मर्दिनी के रूप में संक्षिप्त ही कहा जायेगा।

चन्द्रलेखा ग्राम्या बलिका शास्त्र ज्ञान से अनभिज्ञ है परन्तु वह साक्षर है। वह मैना के द्वारा राजा को पत्र लिखकर भिजवाती है। वह चित्र-कर्म भी जानती हैं। वह अपने हाथ से बनाया राजा का अश्वारोही चित्त सदैव साथ रखती थी। वह ज्ञानवती है क्रोध को पाप समझती है। युद्ध में घयल हो जाने पर वे राजा से कहती हैं- "महराज, मुझे क्रोध आ गया था। यह तपोभ्रशं का लक्षण है, महाराज, क्रोध झूठे अभिमान का चिन्ह है, हर काम में अपने को अधिक महत्वपूर्ण मानने का परिणाम।" [१४] चन्द्रलेखा का चरित्र समता भाव समन्वित है। आखेट-भीत मृगशाचक चन्द्रलेखा की गोद में निश्चित भाव से उसी प्रकार छिप जाता है जिस प्रकार मां की गोद में शिशु। राज रानी होकर भी वह जन-जन को जरा-मृत्यु से मुक्त कराने के लिये कोटिबेधी रस की सिद्धि हेतु स्वयं ही कष्ट क्लेश का वरण करती है।" [१५] राजा व्यष्टि दृष्टि से अभिभूत थे, रानी समष्टि दृष्टि अपनाना चाहती थी। राजा की ओर से ममता और रानी की ओर से समता बोलती थी। [१६] वह स्वयं सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहती है- "युद्ध तलवार की लड़ाई को नहीं कहते, यह तो उसका अंग मात्र है। सीमा पार के दस्युओं की यह धारणाबद्ध मूल हो गयी है कि देश की प्रजा को आसानी से निगला जा सकता है। बेटियां और बहुएं अवमानना का शिकार होती है। वीरो दुर्बल और विभाजित हुए रहना भयंकर पाप के प्रति उत्तरदायी है। हमें ऐसा करना है कि सारी प्रजा एक दुर्भेद्य चट्टान की भांति एक हो जाये और किसी को उसकी ओर आंख उठाने का साहस न रहे।" [१७] संकल्पशीलता रानी का एक और गुण है। चाहे तरूण तपस्वी की खोज हो, चाहे कोटिबेधी रस-सिद्ध का कार्य हो, सर्वत्र रानी में संकल्प की दृढ़ता प्रतीत होती है। रानी कुलाभिमान को व्यर्थ मानती है। उसके प्रति अभिभूत हुए राजा से वह कहती है- "चन्द्रलेखा परिर्मिदेव और जयित्रचन्द्र के रक्त की प्रतिनिधि होने से कुछ अधिक गौरव की अधिकारिणी हो गयी है ? यदि ऐसा सोचते हो तो ठीक नहीं सोचते। आर्यावर्त के विनाश का सेतु व्यर्थ का कुलाभिमान है।" [१८] सिद्ध विच्युत रानी का मन अनुताप की अग्नि से तपकर पावन हो जाता है। वे तपस्विनी, नाटीमाता और विष्णुप्रिया के सम्पर्क में आकर पुनः पति-अनुरक्ता हो जाती है। वे सखी मैना से कहती है - "सिद्ध योगिनी नहीं, महा अधम नारी हूँ। मैंने हीरा पाया और उसे जलती रेत में फेंक दिया।" [१९]

## निष्कर्ष

चन्द्रलेखा में आकर्षण है, दृढ़ता है, साहस है, उत्साह है, दया-सेवा सद्भाव हैं, प्रेम-प्रेरणा हैं, संकल्पशीलता हैं, और सबसे बढ़कर समता का भाव हैं। वह वनदेवी, विजयमनोज्ञा राजमहिषी, विमला, सिद्धि-स्वरूपा और अन्त में साक्षात् महिषमर्दिनी दुर्गा के रूप में चित्रित हुई है। चन्द्रलेखा वास्तव में लेखक की अमौलिक सृष्टि है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. चारू चन्द्रलेखा, पृ० १८
2. चारू चन्द्रलेखा, पृ० १३
3. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २१
4. चारू चन्द्रलेखा, पृ० ६७
5. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २०१
6. चारू चन्द्रलेखा, पृ० ६३

7. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २७
8. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २६
9. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २६
10. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २७
11. चारू चन्द्रलेखा, पृ० १८
12. चारू चन्द्रलेखा, पृ० २७
13. चारू चन्द्रलेखा, पृ० १०७
14. चारू चन्द्रलेखा, पृ० १५६-१५७
15. चारू चन्द्रलेखा, पृ० ६१
16. चारू चन्द्रलेखा, पृ० ७१
17. चारू चन्द्रलेखा, पृ० ७१
18. चारू चन्द्रलेखा, पृ० ६६-६७
19. चारू चन्द्रलेखा, पृ० १३६